कृषि लोक
कृषि एवं किसान के लिए ई-पत्रिका
http://www.rdagriculture.in
e-ISSN No. 2583-0937
कृषि लोक,खंड 02 (04): 181-183, 2022

शून्य लागत कृषि पद्धति

ऋषिकेश यादव, रॉबिन कुमार, तृप्ति मिश्रा

मृदा विज्ञान और कृषि रसायन विभाग
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या-224229

ईमेल: rishiy156@gmail.com

Received: **September 21, 2022;** ***Revised:*** **September 27, 2022** ***Accepted:*** **September 28, 2022**

e-ISSN No. 2583-0937

जीरो बजट प्राकृतिक खेती, एक कृषि अभ्यास है जिसमें उर्वरकों और कीटनाशकों या अन्य केमिकल तत्वों का प्रयोग किए बिना फसलों को उगाया जाता है इस खेती पद्धति में जो फसल उगाई जाती है उनका विकास किसान द्वारा उत्पन्न प्राकृतिक खादों से की जाती है किसान केवल अपने द्वारा उत्पन्न की गई सामग्रियों का प्रोयोग करता है जिसके चलते इस प्रकार की खेती में कम लागत आती है। हालांकि जब किसानों द्वारा केमिकल और कीटनाशक तत्वों का छिड़काव फसलों पर किया जाता है, तो इनके कारण जमीन के उपजाऊपन को नुकसान पहुंचता है और कुछ समय बाद जमीन पर फसलों की पैदावार अच्छे से नहीं हो पाती है| किन्तु अगर जीरो बजट प्राकृतिक खेती तकनीक का इस्तेमाल किसानों द्वारा खेती के दौरान किया जाए तो इसकी मदद से जमीन का उपजाऊपन बना रहता हैं और फसलों की पैदावार अच्छी होती है| भारत में इस खेती की शुरूआत सबसे पहले दक्षिण भारत के कर्नाटक राज्य में हुई थी| भारत का आंध्र प्रदेश राज्य पहला ऐसा राज्य है जिसने जीरो बजट प्राकृतिक खेती को पूरी तरह से अपना लिया है और साल 2024 तक आंध्र प्रदेश सरकार ने जीरो बजट प्राकृतिक खेती को हर गांवों तक पहुंचाने का लक्ष्य रखा है| वहीं हाल ही में हिमाचल प्रदेश सरकार ने भी जीरो बजट प्राकृतिक खेती को अपने राज्य में बढ़ावा देने के एक परियोजना शुरू कर दी है। नीति आयोग ने एक सर्वेक्षण में पाया कि शून्य बजट तकनीक का प्रयोग करके कपास जैसी फसलों की पैदावार 11 प्रतिशत, धान की पैदावार 12 प्रतिशत, मूंगफली 23 प्रतिशत और मिर्च में 34 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गयी| इस अवधारणा को 1990 के दशक के मध्य में कृषिवादी और पद्मश्री से सम्मानित सुभाष पालेकर द्वारा रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों और गहन सिंचाई द्वारा संचालित हरित क्रांति के तरीकों के विकल्प के रूप में बढ़ावा दिया गया।

शून्य कृषि लागत के चार स्तम्भ

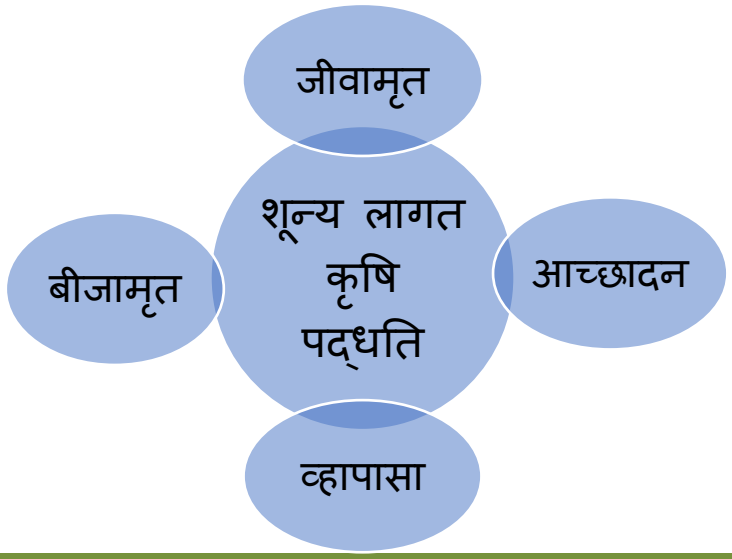

जीवामृत बनाने के फायदेऔर प्रक्रिया

जीवामृत शत प्रतिशत जैविक है इसका मिट्टी पर कोई हानिकारक प्रभाव नहीं पड़ता है। जीवामृत दो शब्दो "जीवन" और "अमृत" से मिलकर बना है जिसका अर्थ है पौधों के जीवन की औषधीय दवा। जीवामृत गोबर+गुड़+दाल+गोमूत्र+आटा+मिट्टी और पानी के मिश्रण और उसके किडवन द्वारा तैयार किया जाता है।जीवामृत पौधों के लिए नाइट्रोजन फास्फोरस और पोटेशियम का एक समृद्ध स्रोत है। जीवामृत पौधों को सभी पोषक तत्व प्रदान करने के साथ साथ ही उन्हें अनेक बीमारियो से बचाता भी है। जीवामृत को मुख्यत दो रूपों में उपयोग किया जाता है। (ठोस या तरल) जीवामृत बनाने के लिए हम गोमूत्र गोबर दाल का आटा और मुट्ठी भर मिट्टी का मिश्रण एक कंटेनर में बनाते है वही दूसरी ओर एक अलग कंटेनर में 200 लीटर पानी लेते है और मिश्रण वाले कंटेनर में बने पदार्थ को पानी से भरे कंटेनर में डालते हैं। उसके बाद लकड़ी की सहायता से मिश्रण को दक्षिणावर्त और वामा व्रत घुमाते हुए मिलाते है। यह प्रकिया दिन में दो बार करते हुए लगभग 7 दिनों तक अपनायी

e-ISSN No. 2583-0937

जाती है। सात दिनों बाद जीवामृत जैविक खाद के रूप में पूर्ण रूप से तैयार हो जाती है। जीवामृत बनाने के बाद करीब 8 महीनो तक हम इसे सुचारू रूप से संचित और उपयोग में ला सकते है।

एक एकड़ के लिए जीवामृत बनाने की सामग्रियां	
अवयव	**मात्रा**
पानी	200 लीटर
गाय का गोबर	10 किलोग्राम
गाय का मूत्र	10 लीटर
दालका आटा	2 किलोग्राम
गुड़	2 किलोग्राम
मिट्टी	एक पूरा हाथ

बीजामृत बनाने की विधि और फायदे

बीजामृत का प्राकृतिक खेती में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान है इसके प्रभाव को देखते हुए मै अपने किसान भाइयों से एक बात जरूर कहना चाहूंगा कि बीजों की बुआई से पहले उसका उपचार जरूर कर ले।जब भी हम बीजामृत से बीजो का उपचार करते है तो बीजामृत का हल्के हाथों से बीजों पर एक लेप लगाते है और उसे कुछ देर के लिए छाया में रख के सुखाते है उसके बाद उसका उपयोग बुआई के लिए करते हैकिन्तु अगर हमे किसी नर्सरी पौधशाला को बीजामृत से उपचारित करना है तो हम नर्सरी की जड़ों को बीजामृत के घोल में करीब आधे घण्टे तक उपचारित करते है उसके बाद उसेखेत में लगाया जाता है

100 किलोग्राम बीजों को उपचार करने की सामग्रियां

- 20 लीटर पानी
- 5 किलोग्राम गाय का गोबर
- 5 लीटरगाय का मूत्र
- 50 ग्राम चुना पत्थर
- मुट्ठी भर मिट्टी

बीजामृत से बीजों का उपचार करने से अंकुरण लगभग 90 प्रतिशत से अधिक होता है गोबर में बहुत से मित्र जीवाणु पाए जाते है जो बीजों को भोजन और अन्य सामग्रीया उपलब्ध कराने में सहायता करते है गोमूत्र, बीजामृत में एक एंटीसेप्टिक का काम करता है और बीजों को बहुत सारे हानिकारक जीवाणुओं कवको और मिट्टी जनित रोगों से बचाता है। इसका अधिक से अधिक लाभ उठाने के लिए इसका प्रयोग इसके बनने के 48 घण्टे के भीतर कर लेना चाहिए।

आच्छादन

मिट्टी की नमी को सुरक्षित रखने के लिए और उसकी गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए आच्छादन का सहारा लिया जाता है इस प्रक्रिया के अन्दर मिट्टी की सतह पर मेटेरिल लगाए जाते हैं इसमें आच्छादन की मोटाई 4.5 इंच से ज्यादा नहीं होनी चाहिए। जीवाणु और जड़ों को प्राणवायु उपलब्ध कराने के लिए आच्छादन का प्रयोग किया जाता है इसके अंदर हम जिस भी वस्तु का प्रयोग करते है उसे पहले बड़े बड़े टुकड़ों में काट लेते है आच्छादन प्रक्रिया अपनाने से पानी और बिजली की 90 फीसदी बचत की जा सकती है और यह मुख्यत तीन रूपों में खेतो में इस्तेमाल किया जाता है।

मृदाच्छादन	सजीवाच्छादन	स्टॉच्छादन

व्हापासा

व्हापासा वह स्थिति होती है जिसमें हवा अणु हैं और पानी के अणु मिट्टी में मौजूद होते है और इन दोनों अणु की मदद से पौधे का विकास होता है| भूमि के अंदर 2 मिट्टी कड़ो के बीच जो खाली जगह रहती है उनमें पानी का अस्तित्व बिल्कुल नही चाहिए बल्कि उन खाली जगहों में 50 प्रतिशत वाष्प और 50 प्रतिशत हवा का समीश्रण चाहिए उस एकात्मिक स्थिति को व्हापासा कहते है।